

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , किंग्स, व्याख्यान 12

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांट

ऐतिहासिक आख्यानो का प्रचार करने की विधियाँ

ऐतिहासिक आख्यानो का प्रचार करने पर

मुझे लगता है कि हम सभी इस बात से सहमत होंगे कि यदि हम एक ऐतिहासिक कथा पाठ को एक उपदेश के रूप में लेते हैं, तो हमें वास्तव में उपदेश में कहानी को फिर से बताने के अलावा और भी बहुत कुछ करना चाहिए। मेरा मानना है कि एक उपदेश को केवल दोबारा कहने से ज्यादा कुछ करना चाहिए, लेकिन सवाल यह है: आप "अधिक" कैसे तैयार करते हैं? और क्या है? निश्चय ही हमारी इच्छा वचन का प्रचार करने की है। इससे मेरा तात्पर्य यह है कि हमारी इच्छा उस संदेश को व्यक्त करने की होगी जिसे ईश्वर ने पवित्रशास्त्र के उस हिस्से में रखा है जिसे हम संभाल रहे हैं। हम नहीं चाहते कि कोई पाठ हमारे अपने विचारों या सिद्धांतों या राय का बहाना बने, बल्कि हम उस शब्द का प्रचार करना चाहते हैं जो भगवान ने उस पाठ में रखा है। लेकिन सवाल यह है कि जब हम किसी ऐतिहासिक पाठ पर उपदेश देते हैं तो हम ऐसा कैसे करते हैं।

मुझे लगता है कि वास्तविक अर्थों में किसी ऐतिहासिक पाठ पर उपदेश देना किसी उपदेशात्मक पाठ या अन्य प्रकार के पाठों की तुलना में कहीं अधिक कठिन है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसके बारे में कैसे सोचते हैं। ऐतिहासिक ग्रंथ उन लोगों और स्थितियों से संबंधित हैं जो समय और सांस्कृतिक संदर्भ में हमारी आज की स्थिति से बहुत पहले ही दूर हो चुके हैं। ताकि आप सभी इसे यह कहते हुए सुन सकें कि संदेश को उस स्थिति से प्रासंगिक या अनुवादित किया जाना चाहिए जिसमें यह पवित्रशास्त्र के आख्यानो में वर्णित है।

लेकिन सवाल अब भी है: हम ऐसा कैसे करें? आप उस ऐतिहासिक अंतर को कैसे पाटेंगे? आप ऐसे लोगों के साथ काम कर रहे हैं जो हमसे बहुत अलग समय और परिस्थितियों में रहते थे। सदियों से उन प्राचीन ग्रंथों को प्रासंगिक बनाने के लिए विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया गया है। प्रोटेस्टेंट सुधार से पहले के समय में रूपक पद्धति का उपयोग आम था। आप शायद उस पद्धति से परिचित हैं। लेकिन यह विधि वास्तव में इन कहानियों को आध्यात्मिक बनाती है ताकि ऐतिहासिक

तथ्यों के रूप में कथाओं के तथ्यों का वास्तव में बहुत अधिक महत्व न हो। इसके बजाय वे गहरे आध्यात्मिक सत्यों के वाहक बन जाते हैं ताकि तथ्य स्वयं बहुत अधिक महत्वपूर्ण न हों, लेकिन वे जो आध्यात्मिक सत्य लेकर आते हैं वे ऐसी चीजें हैं जिन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और उन्हें महत्वपूर्ण माना जाता है ।

रूपक विधि का उदाहरण: उत्पत्ति 24 मैं इसका उदाहरण देता हूँ। मैं शुरुआत में इसे यहां उत्पत्ति 24 से चित्रित करूंगा, जो उन ग्रंथों में से एक नहीं है जिन्हें हम देख रहे हैं, लेकिन यह एक ऐतिहासिक कथा है। उत्पत्ति 24 वह कहानी है जहां इब्राहीम अपने बेटे इसहाक के लिए पत्नी ढूंढने के लिए अपने नौकर को भेजता है। यदि आप उत्पत्ति 24 को उस कहानी के साथ देखते हैं और आप यह निर्धारित करने के लिए एक रूपक विधि का उपयोग करते हैं कि उस कहानी का महत्व या अर्थ आज हमारे लिए क्या है, तो उस विधि और उस विधि के अभ्यासकर्ताओं ने कहा है कि इसहाक मसीह का एक आदर्श है जो उससे शादी करता है दुल्हन, चर्च, जिसका प्रतिनिधित्व रिबका करती है। इब्राहीम का सेवक जो इसहाक के लिए रिबका को सुरक्षित रखता है, वह उपदेशक है, जिसे परमेश्वर के वचन की घोषणा करके, चर्च के सदस्यों को मसीह के पास लाना है। रिबका के पानी भरने के लिए कुएं पर जाने की दैनिक प्रथा का मतलब है कि चर्च को प्रतिदिन भगवान के वचन के कुएं से पानी लेकर जीवित रहना चाहिए। जो ऊँट स्वयं पानी नहीं खींच सकते, उन्हें पानी अवश्य दिया जाना चाहिए, याद रखें कि रिबका ने यही किया था, ये वे लोग हैं जो स्वयं परमेश्वर के वचन का उपयोग नहीं कर सकते हैं, लेकिन उन्हें इसका निर्देश दिया जाना चाहिए। और यह लगातार चलता रह सकता है। तो आप कहानी का विवरण लेते हैं और आप उन्हें किसी प्रकार के आध्यात्मिक महत्व का उच्च अर्थ देते हैं, और फिर आप कहते हैं कि इन आख्यानों को पढ़ने से हमें यही मिलेगा।

अब, मुझे लगता है कि इस तरह के दृष्टिकोण का वास्तव में पवित्रशास्त्र की व्याख्या से कोई लेना-देना नहीं है, यानी कि ईश्वर ने हमारे समझने और उससे लाभ उठाने के लिए पवित्रशास्त्र में जो कुछ रखा है, उसे पढ़ना। वास्तव में इसे " ईसोगेसिस " कहा जाता है, पवित्रशास्त्र में इन चीजों को

पढ़ना। जो बातें पढ़ी जाती हैं वे सत्य हो सकते हैं जिन्हें पवित्रशास्त्र में कहीं और पढ़ा जा सकता है, लेकिन आप वास्तव में उन्हें उस पाठ पर रख रहे हैं और पाठ को अपना संदेश नहीं बोलने दे रहे हैं। इसलिए जब आप अर्थ या महत्व प्राप्त करने के लिए ऐतिहासिक आख्यानों के साथ रूपक पद्धति का उपयोग करते हैं, तो आप वास्तव में जो करते हैं वह कथा के तथ्यों को अपने आप में महत्वपूर्ण बनाना बंद कर देता है। वे बस कुछ गहरे, या उच्चतर, आध्यात्मिक महत्व के वाहक बन जाते हैं, लेकिन अपने आप में उनका बहुत कम या कोई महत्व नहीं होता है। तो मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक अस्वीकार्य तरीका है; यह उस संदेश के साथ न्याय नहीं करता है जो ईश्वर ने हमें पवित्रशास्त्र के इन पाठों में दिया है।

अनुकरणीय उपदेश बनाम मुक्ति-ऐतिहासिक उपदेश

खैर, इसका विकल्प क्या है? कुछ साल पहले नीदरलैंड में धर्मशास्त्रियों के बीच इस सवाल पर बहस हुई थी: उपदेश में ऐतिहासिक आख्यानों को कैसे संभालना है। उस बहस में आपके पास एक ओर " अनुकरणीय उपदेश" कहा गया था , जो कि हमें कैसे जीना चाहिए इसके उदाहरण देने के लिए ऐतिहासिक आख्यानों का उपयोग करना है। एक ओर अनुकरणीय , या उदाहरणात्मक, उपदेश, और जिसे "मुक्ति-ऐतिहासिक उपदेश" कहा जाता था, उसके विरुद्ध स्थापित किया गया था। तो ये दो शब्द उपदेश में ऐतिहासिक आख्यानों के उपचार के लिए दो अन्य दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक ओर उदाहरणात्मक, या अनुकरणीय , और दूसरी ओर मुक्तिदायक ऐतिहासिक उपदेश। अनुकरणीय उपदेश वह उपदेश है जिसमें बाइबिल की कहानियों को ऐसे उदाहरणों के रूप में घोषित किया जाता है कि हमें आज कैसे कार्य करना चाहिए या नहीं करना चाहिए। और उस प्रकार के दृष्टिकोण में आप पुराने नियम के विभिन्न व्यक्तित्वों के पापों को उन चीजों के उदाहरण के रूप में देखेंगे जो हमें नहीं करना चाहिए। आप उन अच्छी चीजों को देखेंगे जिन्हें आप पुराने नियम में इनमें से कुछ लोगों को उदाहरण के रूप में करते हुए पाते हैं जिनका हमें अनुसरण करना चाहिए और उनके जैसा बनना चाहिए। तो वह अनुकरणीय उपदेश मूल रूप से पैटर्न का पालन करता है: जैसा यह करता है वैसा करो और जैसा वह करता है वैसा मत करो।

अब फिर से, यदि आप उत्पत्ति 24 पर वापस जाते हैं, इब्राहीम ने अपने नौकर को इसहाक के लिए एक पत्नी खोजने के लिए भेजा था और उस पद्धति, अनुकरणीय पद्धति का उपयोग किया था, तो आप कई तरीके पा सकते हैं जिसमें कुछ लोगों ने इस बात की वकालत की है कि यह अनुच्छेद हमें उदाहरण देता है। उदाहरण के लिए, इब्राहीम चाहता था कि उसका बेटा इसहाक एक कनानी महिला से शादी न करे, लेकिन जो प्रभु को जानता था वह हमें एक उदाहरण देता है। आज माता-पिता होने के नाते हमें चिंतित होना चाहिए कि हमारे बच्चे अविश्वासियों से शादी न करें। इब्राहीम को चिंता थी कि इसहाक एक कनानी से शादी नहीं करेगा। वह हारान को किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढने के लिए वापस भेजता है जो प्रभु का अनुयायी हो।

दूसरा, कहानी में एक और तत्व जो एक उदाहरण के रूप में काम कर सकता है वह यह है कि नौकर ने प्रार्थना की। तब उस ने चिन्ह मांगा, कि जो लड़की पानी भरने आए, और जिस से वह पानी मांगे, वह कहे, मैं तुम्हें भी पानी पिलाऊंगा, और तुम्हारे ऊंटों को भी पानी पिलाऊंगा। और वह उसके लिए संकेत था कि यही वह लड़की थी। जीवन साथी की तलाश में हमें जो उदाहरण देखना है वह प्रार्थना का विषय होना चाहिए, जिसमें माता-पिता की अपने बच्चों के लिए प्रार्थना भी शामिल है। यह एक अच्छा बाइबिल सिद्धांत है, इसमें कोई संदेह नहीं है। सवाल यह है: क्या पवित्रशास्त्र के इस अंश से हमें यही संदेश मिलता है?

यहां इस अध्याय का तीसरा उदाहरण दिया गया है: रिबका न केवल इब्राहीम के नौकर को पानी पिलाने के लिए बल्कि ऊंटों को भी पानी पिलाने के लिए तैयार है। यह हमें सिखाता है कि अगर हमारी बेटियां अच्छी पत्नी और मां बनने की इच्छा रखती हैं, तो उन्हें सिर्फ अपने लिए नहीं जीना चाहिए, बल्कि खुशी-खुशी दूसरों की सेवा में खुद को समर्पित करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसलिए यदि आप इस दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं, तो आप इसहाक की शादी की कहानी में भक्ति के अभ्यास में विभिन्न सबक पा सकते हैं, खासकर अपने बच्चों के लिए उपयुक्त साथी ढूंढने के मामले में। अब यह उत्पत्ति 24 जैसी कथा के लिए एक

अनुकरणीय, उदाहरणात्मक दृष्टिकोण है। अनुकरणीय उपदेश

पर वन्नॉय की सावधानी अब कुछ लोगों ने उस प्रकार के उपदेश पर, अर्थ या महत्व खोजने की कोशिश करने की उस पद्धति पर आपत्ति जताई है, और आपत्तियाँ कई चीजों पर आधारित हैं। उनमें से यह पहला है: इसमें कुछ व्यक्तिपरक और मनमाना है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आप उस पद्धति का उपयोग करने जा रहे हैं तो दुभाषिया के सामने यह प्रश्न आता है: हमारे लिए एक उदाहरण के रूप में क्या लिया जाना चाहिए और क्या नहीं? उत्पत्ति 24 के संबंध में कोई कह सकता है कि आज किसी व्यक्ति या लड़की को यह जानने के लिए प्रभु से संकेत मांगना चाहिए कि वह जिस व्यक्ति या लड़की के बारे में सोच रहा है, क्या प्रभु ने उसे अपना साथी बनाने का इरादा किया है या नहीं। नौकर ने यही किया - उसने संकेत माँगा। कोई अन्य व्यक्ति ज़ोर देकर कह सकता है कि अब जब हमारे पास पवित्रशास्त्र है तो इस तरह के विशेष रहस्योद्घाटन या संकेत की माँग करना वास्तव में उचित नहीं है। हमें अपने जीवन के लिए पर्याप्त रहस्योद्घाटन और दिशानिर्देश दिए गए हैं। हमें संकेतों की जरूरत नहीं है।

लेकिन सवाल यह है कि हम यह कैसे तय करें कि किसे हमारे लिए अनुकरणीय माना जाए? फिर इसके अलावा, हम यह कैसे निर्धारित करेंगे कि इसका उपयोग सकारात्मक या नकारात्मक अर्थ में किया जाए? एक उदाहरण बनना क्या है, और क्या एक उदाहरण बनना है जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए या नहीं? इसमें निर्णय शामिल हैं, और वे निर्णय ग्रंथों से उत्पन्न नहीं होते हैं; तुम्हें वह कहीं और से लाना होगा। तो इस विधि में कुछ व्यक्तिपरक और मनमाना है। दूसरा, इस प्रकार के उपदेश को एंथ्रोपोसेंट्रिक कहा जाता है, जिसका अर्थ है मनुष्य-केंद्रित, ग्रीक से *एंथ्रोपोस*। यह ईश्वर-केन्द्रित या ईश्वर-केन्द्रित के बजाय मनुष्य-केन्द्रित है। उस प्रकार का उपदेश मानवकेंद्रित होता है। मनुष्य ध्यान का केंद्र है और ईसा मसीह के उपदेश के स्थान पर यह उपदेश देना आसान हो जाता है कि क्या करें और क्या न करें। बहुत आसानी से यह पद्धति विधिवादी, नैतिक उपदेश के खतरे में पड़ जाती है। ताकि इस दृष्टिकोण में आप लगातार अपने आप को विभिन्न बाइबिल पात्रों द्वारा मापें - अब्राहम, जैकब, पीटर, पॉल या किसी और जैसे लोग। वे हमारे सामने उदाहरण के रूप में रखे गए हैं, हमें उनके सकारात्मक गुणों का अनुसरण करना चाहिए न कि उनके नकारात्मक गुणों का। उस पर आपत्ति

यह है कि इस तरह से उपदेश देने से, ईश्वर स्वयं रहस्योद्घाटन और मुक्ति के अपने महान कार्यों में पर्याप्त रूप से ध्यान में नहीं आ सकते हैं। यह ईश्वरकेंद्रित के बजाय मानवकेंद्रित है। आप अनुच्छेदों को इस तरह से व्यवहार कर सकते हैं और भगवान और उनके लोगों के लिए उनके शक्तिशाली कार्यों के बारे में कुछ भी नहीं देख सकते हैं। और क्या वास्तव में ईश्वर अपने शक्तिशाली कृत्यों में रहस्योद्घाटन और मुक्ति में इतिहास में हस्तक्षेप नहीं करता है, क्या बाइबिल की कथाएँ वास्तव में इसके बारे में नहीं हैं? क्या बाइबिल का इतिहास मुक्ति का इतिहास नहीं है कि कैसे भगवान ने मानव इतिहास में मुक्ति लायी है? इसलिए यह वास्तव में इतना अधिक नहीं है, जब आप इस पर विचार करते हैं, कि इब्राहीम या इसहाक या कोई और क्या करता है, तो यह वही है जो ईश्वर कर रहा है जो बाइबिल के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण है। अब यह सच है कि वह अक्सर लोगों के माध्यम से काम करता है लेकिन आप इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं करना चाहेंगे कि यह भगवान है जो काम कर रहा है। बाइबिल का इतिहास मुक्तिदायी इतिहास है। तो इसी कारण से जिसे अनुकरणीय उपदेश कहा गया है, उसके विरुद्ध कुछ लोगों ने उस चीज़ की वकालत की है जिसे मुक्तिदायक ऐतिहासिक उपदेश कहा गया है।

मुक्तिदायक ऐतिहासिक उपदेश मुक्तिदायक ऐतिहासिक उपदेश वह उपदेश है जिसमें प्राथमिक जोर उस स्थान पर पड़ता है जो बाइबिल में दर्ज घटनाओं का भगवान के रहस्योद्घाटन और मुक्ति के इतिहास में है। अब, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, उस इतिहास में जो हमारे पास बाइबिल में है, जो मुक्ति का इतिहास है, हम सामना करते हैं कि कुछ लोग क्या करते हैं या क्या नहीं करते हैं। लेकिन मनुष्य जो करते हैं उससे कहीं अधिक है क्योंकि हम इतिहास में ईश्वर के कार्य और विभिन्न व्यक्तियों के जीवन के माध्यम से अपने उद्देश्यों को पूरा करने के उनके कार्य का भी सामना करते हैं। इसलिए बाइबिल का इतिहास एक ऐसा इतिहास है जिसमें ईश्वर के कार्य मनुष्यों के इतिहास में दिखाई देते हैं। बाइबिल का इतिहास वह इतिहास है जो ईश्वर के शक्तिशाली कार्यों और उनके पुत्र यीशु मसीह के आगमन की ओर इशारा करता है।

मुझे लगता है कि यह वह इतिहास है जिसे हमें तब देखना चाहिए जब हम बाइबिल के पाठ

और इन ऐतिहासिक आख्यानों को पढ़ते हैं और जब हम उन पर उपदेश देते हैं। ताकि जब हम इन आख्यानों को पढ़ें, और जब हम उन पर उपदेश दें, तो हमें कुछ सीखना चाहिए कि भगवान कौन है, उसने क्या वादा किया है, और उसने इतिहास में क्या किया है।

मैंने जो कहा है उसका महत्व इस बात में है कि इस इतिहास में आपको हमारे विश्वास का आधार मिलता है। और आप इस इतिहास में सभी युगों में परमेश्वर के सभी लोगों के विश्वास का आधार पाते हैं। ईसाई धर्म एक ऐतिहासिक विश्वास है। यह ईश्वर ने इतिहास में जो किया है उसमें निहित है। इसलिए इतिहास वास्तव में आचरण के लिए मार्गदर्शक की तुलना में विश्वास के आधार के रूप में अधिक महत्वपूर्ण है। इसका मतलब यह नहीं है कि आप इस इतिहास से चीजें नहीं सीख सकते जहां तक हमें जीवन जीने के तरीके की बात है। लेकिन आपको यह याद रखना होगा कि बाइबिल के इतिहास का मूल उद्देश्य क्या है।

अब उत्पत्ति 24 पर वापस आने के लिए, उत्पत्ति 24 में मुक्तिदायी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य यह कहेगा कि जब हम उस कहानी को देखते हैं, तो हमें सबसे पहले यह देखना चाहिए कि भगवान ने क्या किया है और क्या कर रहा है। और हमें देखना चाहिए कि परमेश्वर इब्राहीम और इसहाक से किया गया अपना वादा पूरा कर रहा है कि वे एक महान लोगों के पूर्वज होंगे जिनके माध्यम से अंततः पृथ्वी के सभी लोग धन्य होंगे। याद रखें, यह वह वादा है जो परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था - पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद दिया जाएगा, और उसका वंश इसहाक के माध्यम से गिना जाएगा। इसहाक उसकी प्रतिज्ञा का बीज था, इश्माएल नहीं। इसलिए हमें इस अध्याय में ईश्वर को कार्य करते हुए देखना है, न कि इब्राहीम, नौकर, और न ही रिबका को। वे सभी इसमें शामिल हैं, लेकिन हमें इस विवाह को संपन्न कराने में ईश्वर को कार्य करते हुए देखना है। वह अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए कथा में मौजूद लोगों के विश्वास, आज्ञाकारिता, प्रार्थना जीवन का उपयोग करता है। लेकिन अध्याय का केंद्र बिंदु ईश्वर है। जब हम उस अध्याय को पढ़ते हैं तो हमें देखना चाहिए कि परमेश्वर अपनी वाचा का पालन करता है। वह अपने वादे के प्रति वफादार है, और जैसा कि हम देखते हैं, हम विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ उसकी सेवा करने के लिए भी प्रेरित हो सकते हैं।

तो वह मुक्तिदायक ऐतिहासिक दृष्टिकोण यह कहेगा कि हम ऐतिहासिक आख्यानों में न

केवल उदाहरण देखते हैं कि हमें कैसे रहना चाहिए या हमें क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें स्वयं ईश्वर का रहस्योद्घाटन मिला है कि वह कौन है और कैसे काम करता है। जो परमेश्वर इब्राहीम और इसहाक के समय में कार्य कर रहा था वही परमेश्वर आज हमारे जीवन में शामिल है। वह आज भी उतना ही वफादार है जितना तब था। तो उस प्रकार का परिप्रेक्ष्य वह परिप्रेक्ष्य है जो एक मुक्तिदायी ऐतिहासिक दृष्टिकोण पाठ में लाता है।

अनुकरणीय और मुक्तिदायक ऐतिहासिक: एक बहुआयामी दृष्टिकोण

मुझे नहीं लगता कि उन दो दृष्टिकोणों के बीच कोई आवश्यक संघर्ष या विरोधाभास देखना आवश्यक है। कुछ लोगों ने इसे इस तरह से स्थापित किया है कि उन्हें इसमें विरोधाभास या विरोधाभास नजर आता है। आप या तो एक तरह से उपदेश देते हैं या दूसरे तरह से प्रचार करते हैं। आप या तो अनुकरणीय या मुक्तिदायक ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करते हैं, और आप उन्हें संयोजित नहीं कर सकते। मुझे ऐसा लगता है कि दोनों पद्धतियों के बीच कोई आवश्यक विरोध या विरोधाभास नहीं है। मुझे लगता है कि हमें बाइबिल में स्पष्ट रूप से उदाहरण मिलते हैं, लेकिन मुद्दा यह है कि हमें किसी दिए गए ऐतिहासिक आख्यान से प्राप्त उदाहरणों को अलग या पृथक नहीं करना चाहिए। हमें इसे उस ऐतिहासिक संदर्भ से अलग नहीं करना चाहिए जिसमें यह हमें दिया गया है। यदि आप विशेष रूप से अनुकरणीय दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं, तो यह बताई गई घटनाओं और मुक्तिदायक इतिहास के आंदोलन के स्थान और कार्य से आख्यानों को हटा देता है। बाइबिल के ऐतिहासिक आख्यानों को एक-दूसरे के साथ उनके संबंधों और मुक्ति के इतिहास के भीतर उनकी एकता में देखा जाना चाहिए। निःसंदेह, इसका केंद्र बिंदु मसीह में मिलता है।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि कोई भी या हर कोई जो अनुकरणीय तरीके से उपदेश देता है, वह मसीह को बाइबिल के इतिहास का केंद्रीय बिंदु नहीं मानता है। मुद्दा यह है कि उपदेश देने का वह तरीका शायद उसे स्पष्ट न कर सके। जो व्यक्ति मुक्तिदायी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से काम करता है, उसे इस बात से इनकार करने की आवश्यकता नहीं है कि आप बाइबिल के इतिहास में उदाहरण और दृष्टान्त पा सकते हैं। जो व्यक्ति मुक्तिदायी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से काम

करता है वह इन सवालों से चिंतित रहता है: क्यों? कैसे? और वे किस अर्थ में एक उदाहरण हो सकते हैं? मुझे लगता है कि आप क्यों, कैसे और किस अर्थ में इन सवालों का जवाब केवल तभी दे सकते हैं जब आप दिए गए आख्यान को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखते हैं।

उससे संबंधित यह है: मुझे लगता है कि हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि बाइबिल के ऐतिहासिक खंड सिर्फ कहानियां नहीं हैं। इससे मेरा तात्पर्य यह है कि ऐतिहासिक आख्यान हमें उन चीजों के बारे में बताते हैं जो वास्तव में ऐतिहासिक रूप से घटित हुई थीं। आप एक कहानी बता सकते हैं, और यह घटित भी हो सकती है और नहीं भी। बाइबिल के ऐतिहासिक आख्यान हमें उन घटनाओं के बारे में बताते हैं जो घटित हुईं। इसका मतलब यह है कि उन्हें वास्तविक इतिहास के रूप में संभाला जाना चाहिए, न कि केवल कुछ सत्य को चित्रित करने के लिए दिए गए दृष्टान्तों के रूप में। दृष्टान्त में कुछ भी गलत नहीं है। यीशु ने सत्य को स्पष्ट करने के लिए दृष्टान्तों का प्रयोग किया। लेकिन पुराने नियम के ऐतिहासिक आख्यान दृष्टान्त नहीं हैं। पुराने नियम के ऐतिहासिक आख्यान हमें उन घटनाओं के बारे में बताते हैं जो घटित हुईं।

धर्मग्रंथ के सैद्धांतिक और ऐतिहासिक खंड, जो धर्मग्रंथ के सैद्धांतिक खंडों और धर्मग्रंथ के ऐतिहासिक खंडों के बीच संबंध का प्रश्न उठाते हैं। इसका सामान्य सिद्धांत यह है: इतिहास सिद्धांत का आधार है। आपको प्रायश्चित के औचित्य का सिद्धांत मिलता है जो मसीह के कार्य और क्रूस पर उनकी मृत्यु और उनके दफनाने और उनके पुनरुत्थान की ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। वह इतिहास सिद्धांत का आधार है। यदि आप वास्तव में इसे समझते हैं, तो आप बाइबिल के इतिहास को केवल उदाहरण के रूप में नहीं देखेंगे। यह उदाहरणात्मक हो सकता है, लेकिन यह उससे कहीं अधिक है क्योंकि इतिहास केवल सिद्धांत का चित्रण नहीं करता है, यह सिद्धांत के लिए आधार प्रदान करता है। यदि आप बाइबिल के ऐतिहासिक खंडों को केवल उदाहरण के रूप में लेते हैं, तो यह वास्तव में महत्वपूर्ण नहीं है कि वर्णित घटनाएँ वास्तव में घटित हुईं या नहीं।

इतिहास में निहित आस्था - एसआर ड्राइवर काउंटर उदाहरण जेनेसिस पर एसआर ड्राइवर की टिप्पणी पितृसत्तात्मक आख्यानों के बारे में यह कहती है। मैं उद्धृत करता हूँ, “इनमें से कितनी

कथाएं वास्तव में ऐतिहासिक हैं और कितनी लोकप्रिय कल्पना और अलंकरण के कारण, हम नहीं कह सकते। लेकिन कथा का महत्वपूर्ण और वास्तविक महत्व उनके द्वारा प्रदर्शित चरित्र के प्रकार और नैतिक और आध्यात्मिक पाठों में निहित है, चाहे वे पूरी तरह से ऐतिहासिक हों या नहीं, उससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है। पितृपुरुष विश्वास और अच्छाई के उदाहरण हैं और कभी-कभी अयोग्यता और नैतिक विफलता के भी। वहाँ एसआर ड्राइवर है जो वास्तव में महसूस करता है कि पितृसत्तात्मक आख्यानो का ऐतिहासिक मौखिक मूल्य बहुत कम है। उन्हें नहीं लगता कि वहां वर्णित घटनाएं वास्तव में घटित हुईं। लेकिन उनका कहना है कि चरित्र के प्रकार के मामले में वे हमारे लिए मूल्यवान हैं; वे नैतिक विफलता के उदाहरण हैं। आप देखिए, ड्राइवर के लिए, ये कहानियाँ किसी ऐसी चीज़ के बारे में बताती हैं या नहीं जो वास्तव में मुक्ति के इतिहास में घटित हुई थी, उसके लिए इसका कोई महत्व नहीं है। उनका सरोकार केवल धार्मिक और नैतिक पाठों से है। यह एक उदाहरणात्मक, या अनुकरणीय उपयोग है।

लेकिन उसने जो खोया है वह मुक्तिदायक इतिहास में उन घटनाओं की भूमिका और कार्यप्रणाली का परिप्रेक्ष्य है। ड्राइवर के लिए विश्वास वास्तव में इतिहास में निहित नहीं है, लेकिन वास्तविक बाइबिल विश्वास इतिहास में निहित है। मुझे लगता है कि हमारे उपदेश को वास्तव में पीटर और पॉल के उपदेश की तरह प्रदर्शित करना चाहिए। यदि आप प्रेरितों के काम की पुस्तक में जाएँ और प्रेरितों के काम की पुस्तक में उन उपदेशों को देखें, तो वे क्या करते हैं? वे पुराने नियम काल के इतिहास का पाठ करते हैं, या फिर से बताते हैं। इब्राहीम को बुलाने और दाऊद को जीवित करने और मसीहा के आने के वादे को पूरा करने में परमेश्वर क्या कर रहा था। वह मुक्तिदायक ऐतिहासिक उपदेश है। हमें यह देखने की ज़रूरत है कि बाइबल की घटनाओं में ईश्वर कैसे रहस्योद्घाटन और मुक्तिदायक तरीके से कार्य कर रहा था।

इसलिए मैं फिर से सोचता हूँ कि पुराने नियम में ऐतिहासिक आख्यानो पर उपदेश देने के लिए उस मुक्तिदायक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता है। मैं यह नहीं कहूंगा कि उदाहरणात्मक या अनुकरणीय महत्व खोजने की संभावना को नकारें या बाहर रखें, लेकिन मुझे लगता है कि मुक्तिदायक ऐतिहासिक संदर्भ आपको बताएगा कि किस तरह से कुछ

उदाहरणात्मक या अनुकरणीय हो सकता है। और यदि आप केवल कुछ उदाहरणात्मक या अनुकरणीय महत्व देखते हैं, तो आपने इस कथा को पहले स्थान पर पवित्रशास्त्र में शामिल करने के कारण का एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयाम खो दिया है। आप एक सैद्धांतिक पाठ को एक कथा पाठ के उदाहरण के साथ चित्रित कर सकते हैं, लेकिन यदि आप एक उपदेश के लिए एक कथा पाठ चुनते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको इसकी अखंडता और मुक्ति के इतिहास में इसके विशिष्ट स्थान को ध्यान में रखना चाहिए। इसे केवल उदाहरण के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए, बल्कि इस प्रगति और मुक्तिदायी इतिहास के आंदोलन में किसी तरह योगदान के रूप में लिया जाना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि कथा ग्रंथों पर उपदेश में उस परिप्रेक्ष्य को शामिल करने की आवश्यकता है।

यह आसानी से नहीं किया जा सकता। कुछ ऐतिहासिक आख्यानों के साथ यह दूसरों की तुलना में अधिक आसानी से किया जाता है, और कुछ के साथ आपको आश्चर्य होता है कि कैसे। लाल खाली इतिहास की इस चल रही प्रक्रिया में यह विशेष कथा कैसे कार्य कर रही है ? मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिस पर बहुत अधिक काम करने और बहुत अधिक विचार करने की आवश्यकता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह कुछ काम करने और सोचने लायक है।

एक ऐतिहासिक पाठ का उपयोग करके एक सिद्धांत का चित्रण जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, इस बिंदु से मैं जो करना चाहता हूँ वह इन एलिजा कथाओं में वापस जाना है और कुछ उदाहरण देना है कि कैसे एक मुक्तिदायक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य इन एलिजा कथाओं में से कुछ में महत्व या अर्थ पर प्रकाश डाल सकता है। दुर्भाग्य से, हमारा समय बहुत तेज़ी से बीत रहा है। आप एक सैद्धान्तिक पाठ को मुक्ति के इतिहास की किसी विशिष्ट घटना के साथ या एक कथात्मक पाठ के साथ चित्रित कर सकते हैं, लेकिन यदि आप एक कथात्मक पाठ चुनते हैं, तो आपको इसकी अखंडता और मुक्ति के इतिहास में इसके विशिष्ट स्थान को ध्यान में रखना होगा - यानी, सिर्फ नहीं उदाहरण के तौर पर. आप एक सैद्धांतिक पाठ को एक कथात्मक पाठ के साथ चित्रित कर सकते हैं। आप किसी सैद्धांतिक पाठ को चर्च के इतिहास के उदाहरण से भी स्पष्ट कर सकते हैं। आप

कहीं से भी इसका वर्णन कर सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि बाइबिल पाठ को एक चित्रण के रूप में उपयोग करने में किसी अन्य स्रोत से एक चित्रण का उपयोग करने की तुलना में कोई अधिक अंतर्निहित मूल्य है। यदि आप उस संदर्भ को ध्यान में नहीं रखते हैं तो आप सभी प्रकार की विकृतियाँ पैदा कर सकते हैं। मुझे लगता है कि वही सिद्धांत वहां भी लागू होते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि किसी भी कथा पाठ के लिए आपके पास समान सिद्धांत काम करते हैं। आप एक कथात्मक पाठ को अन्य प्रकार के पाठों से अलग कर सकते हैं; आपके पास भविष्यसूचक पाठ, काव्यात्मक पाठ, आपके पास कहावतें, आपके पास उपदेशात्मक पाठ और सैद्धांतिक पाठ हैं। जब आप आख्यान की बात करते हैं, तो मुझे ऐसा लगता है कि बाइबिल में इतनी अधिक कथा इसलिए है क्योंकि बाइबिल का विश्वास इतिहास में जो कुछ हुआ उसमें निहित है। और इसलिए ये कथात्मक ग्रंथ हमें बता रहे हैं कि इतिहास में क्या हुआ, जो वास्तव में हमारे विश्वास का आधार है।

जहां तक ड्राइवर का सवाल है, ये चीजें कभी नहीं हुईं। वे दृष्टान्त, परीकथाएँ, कुछ भी हैं। इसलिए उनका विश्वास इतिहास में घटित चीजों पर आधारित नहीं हो सकता। उसका विश्वास क्या है, मैं उसे यह परिभाषित करने दूँगा; मुझे नहीं पता। मेरा अनुमान है कि यह किसी बिंदु पर इन "कथाओं" में दर्शाए गए विश्वास के प्रकार के साथ एक अस्तित्वगत प्रकार की पहचान है। लेकिन यह ऐसा विश्वास नहीं है जो इतिहास में घटी घटनाओं पर आधारित है क्योंकि वह कहता है कि ऐसा नहीं हुआ था।

मैं कहूँगा कि जब आप कथा ग्रंथों, विशेष रूप से पुराने नियम के कथा ग्रंथों पर उपदेश सुनते हैं, तो संभवतः 95 प्रतिशत समय यह एक उदाहरणात्मक/ अनुकरणीय चीज़ होगी, और मुक्तिदायक इतिहास के आंदोलन के इस बड़े परिप्रेक्ष्य को शायद ही छुआ भी गया हो।

रेबेका ब्रुले द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया